IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

धर्मवीर भारती द्वारा रचित "अंधायुग" नाटक में युद्ध की विभीषिका की प्रासंगिकता

Ku. Rinku A. Vadher
Assistant Professor, Department of Hindi
Shree M. P. Shah Arts and Science College, Surendranagar, Gujarat, India

प्रस्तावना

'अंधा युग' धर्मवीर भारती द्वारा रचित एक प्रसिद्ध और बहुचर्चित गीतिनाट्य है. इस नाटक के द्वारा धर्मवीर भारती ने युद्ध की निरर्थकता बताते हुए ये समझाने का प्रयास किया है कि युद्ध किसी भी स्थिति में मानव समुदाय के लिए हितावह नहीं है. युद्ध की कालिमा मनुष्यता को न सिर्फ़ जर्जरित करती है बल्कि वह आने वाले भविष्य के लिए खतरा भी पैदा कर सकती है. इसके विपरीत परिणाम मनुष्य ह्रदय पर संत्रास और अवसाद की स्थिति को उत्पन्न करते है फिर चाहे वो महाभारत का युद्ध हो या आज के विभिन्न देशों के युद्ध. युद्ध कभी भी मानव जीवन के लिए शुभता का संकेत लेकर नहीं आ सकता.

बीज शब्द : युद्ध, मानव, विभीषिका, बर्बरता, महाभारत, संवेदना.

सन्दर्भ सूचि

[1].धर्मवीर भारती युग चेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला पृष्ठ १८६ प्रकाशक - चिंतन प्रकाशन

[2]. धर्मवीर भारती युग चेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला पृष्ठ १८५ प्रकाशक - चिंतन प्रकाशन

[3].अंधा युग - धर्मवीर भारती पृष्ठ ७५ प्रकाशक - किताब महल